प्रेस विज्ञप्ति

गोविन्द बल्लभ पंत कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय
पंतनगर, जिला– ऊधमसिंह नगर (उत्तराखण्ड)

पंतनगर में कृषि स्नातकों का रावे पाठ्यक्रम प्रारम्भ

पंतनगर। 7 अगस्त, 2018। पंतनगर विश्वविद्यालय के कृषि महाविद्यालय के स्नातक पाठ्यक्रम में अध्ययनरत चतुर्थ वर्ष के विद्यार्थियों को अंतिम वर्ष में पढ़ाये जाने वाले ग्रामीण कृषि अनुभव कार्यक्रम यानि, रूरल एग्रीकल्चरल वर्क एक्सपीरियंस (रावे) पाठ्यक्रम की शुरूआत आज महाविद्यालय के सभागार में आयोजित ओरिएन्टेशन कार्यक्रम से हुई। कार्यक्रम का उद्घाटन डाबर इण्डिया लिमिटेड के प्लांट हैड श्री आलोक कुमार दुबे ने किया। इस अवसर पर कार्यक्रम समन्वयक रावे, डा. रंजन श्रीवास्तव, अधिष्ठाता कृषि, डा. जे. कुमार और यूनिट हैड डावर पंतनगर के श्री आलोक कुमार दुबे मंचासीन थे।

श्री दुबे ने अपने उद्घाटन संबोधन में कहा कि आम व्यक्ति को एक किसान की आवश्यकता प्रतिदिन पड़ती है। क्योंकि वो ही हमारे भोजन का उत्पादन करता है। उन्होंने विद्यार्थियों से अपील की कि वे अपना लक्ष्य निर्धारित करें, स्वंय पर विश्वास करें और अपना काम लगन से करें, मंजिल खुद–ब–खुद उन्हें प्राप्त होगी।

डा. जे. कुमार ने इस अवसर पर बोलते हुए कहा कि भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली, द्वारा कृषि शिक्षा को स्वरोजगारोन्मुखी बनाने के उद्देश्य से स्नातक उपाधि के अन्तर्गत यह प्रशिक्षण कार्यक्रम पाठ्यक्रम में लागू किया गया है। उन्होंने बताया कि रावे का लक्ष्य ग्रामीण जीवन के परिवेश में कृषि परिवार की पृष्ठभूमि से विद्यार्थियों को कृषि की वर्तमान स्थिति से अवगत कराना है ताकि वे खेती–बाड़ी की स्थिति को व्यवहारिक रूप से जाना सकें। डा. जे. कुमार ने विद्यार्थियों को बताया कि इस छः माह के पाठ्यक्रम में उन्हें कृषि के व्यावाहारिक एवं व्यावासायिक पहलुओं को वास्तविक रूप से दिखाया जाएगा। उन्होंने यह भी बताया कि गांव से जुड़ना, प्लांट क्लीनिक, फील्ड भ्रमण एवं औद्योगिक लगाव रावे कार्यक्रम के अन्तर्गत सम्मिलित हैं, जिसमें विद्यार्थियों को एक–एक माह का प्रशिक्षण दिया जायेगा।

पाठ्यक्रम के समन्वयक, डा. रंजन श्रीवास्तव, ने रावे के उद्देश्यों के बारे में बताते हुए कहा कि इसके अन्तर्गत विद्यार्थी गांव में रहकर किसानों की जीवन शैली, सामाजिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक पहलुओं का अध्ययन करते है, साथ ही विद्यार्थी किसानों को फसलोत्पादन, उद्यानिकी, फसल सुरक्षा, कृषि अर्थशास्त्र, कृषि प्रसार जैसे महत्वपूर्ण विषयों पर व्यवहारिक प्रशिक्षण प्रदान करते हैं। इसके साथ ही गांव स्तर पर अपनाई जाने वाली कृषि प्रणाली का अध्ययन करना, स्थानीय भूमि व जलवायु के आधार पर फसल पद्धति तैयार कर उसे क्रियान्वयन हेतु किसानों को प्रेरित करना रावे का मुख्य उद्देश्य है।

डा. श्रीवास्तव ने बताया कि पाठ्यक्रम में पंजीकृत लगभग 130 विद्यार्थयों को भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद की तरफ से रू. 3000/– प्रतिमाह छात्रवृत्ति की व्यवस्था है। विद्यार्थियों को डाबर, महेन्द्रा, केएलए राईसए पेपर इण्डस्ट्री, आँचल डेयरी, शुगर फैक्ट्री, बैल कोल्हू तेल, सोया फैक्ट्री, इन्डो–डच हॉर्ट टैक्नालॉजी, वीपीकेएएस, अल्मोडा, एनबीपीजीआर, भवाली, इत्यादि का भ्रमण भी कराया जायेगा। कार्यक्रम में विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों व अध्यापकों के अतिरिक्त विभिन्न फर्मों के अधिकारियों द्वारा भी व्याख्यान दिये जायेंगे। कार्यक्रम में कृषि स्नातक के चतुर्थ वर्ष के विद्यार्थियों के अतिरिक्त डा. आर.पी. सिंह, डा. पी.एन. राय, डा. सतीश चन्द, डा. त्रिपाठी, डा. मनीषा रानी, डा. रामजी मौर्य, डा. कार्की इत्यादि मौजूद थे। कार्यक्रम का संचालन रावे की छात्रा कुमारी आरजू कोहरा ने किया ।

रावे पाठ्यक्रम के उद्घाटन समारोह में संबोधित करते अधिष्ठाता कृषि, डा. जे. कुमार; साथ में मंचासीन श्री आलोक कुमार दुबे एवं डा. रंजन श्रीवास्तव।

(नरेश कुमार)
समाचार समन्वयक